• कविता...

## मां...

*समुद्र से भी गहरी*
*वृक्ष से भी*
*विशाल घोंसलों को*
*संजोये बेठी है मां।*
*रूई से भी नर्म*
*लोहे से भी सख्त*
*बादलो सी उदार*
*पर्वत सी अडिग है मां।*
*कभी जरा कड़वी*
*कभी बहुत मीठी*
*आइसक्रीम सी है मां।*
*दूध, दही, आटा*
*पुदीने की चटनी है मां*
*झाड़ू पौचा करती*
*एक नदी सी है मां।*
*धरती से*
*उठने वाली*
*एक सौंधी सी*
*गंध है मां।*
*कभी बहन*
*कभी पत्नि*
*अब दादी है मां।*
*कभी थी*

*पर्वत सी*
*अब रेत के टीले*
*की तरह*
*ढह रही है मां।*
*अब नहीं*
*फुर्सत किसी को*
*कि पूछे*
*कहां है मां।*
*पूछो कोई*
*सफेद बालों की*
*जिल्द में*
*चहरे की झुर्रियों में*
*कहानियों की*
*पाण्डुलिपि लिए*
*क्यों बैठी है मां।*

नरेश मेहन

• कहानी/– भीष्म साहनी...

# अमृतसर आ गया है...

**गतांक से आगे...**

बहुत मार-काट हुई है, बहुत लोग मरे हैं। लगता था, वह इस मार-काट में अकेला पुण्य कमाने चला आया है।

गाड़ी सरकी तो सहसा खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जाने लगे। दूर-दूर तक, पहियों की गड़गड़ाहट के साथ, खिड़कियों के पल्ले चढ़ाने की आवाज आने लगी।

किसी अज्ञात आशंकावश दुबला बाबू मेरे पास वाली सीट पर से उठा और दो सीटों के बीच फर्श पर लेट गया। उसका चेहरा अभी भी मुर्दे जैसा पीला हो रहा था। इस पर बर्थ पर बैठा पठान उसकी ठिठोली करने लगा–ओ बेगैरत, तुम मर्द ए कि औरत ए? सीट पर से उटकर नीचे लेटता ए। तुम मर्द के नाम को बदनाम करता ए। वह बोल रहा था और बार-बार हंसे जा रहा था। फिर वह उससे पश्तो में कुछ कहने लगा। बाबू चुप बना लेटा रहा। अन्य सभी मुसाफिर चुप थे। डिब्बे का वातावरण बोझिल बना हुआ था।

ऐसे आदमी को अम डिब्बे में नई बैठने देगा। ओ बाबू, अगले स्टेशन पर उतर जाओ, और जनाना डब्बे में बैटो।

मगर बाबू की हाजिरजवाबी अपने कण्ठ में सूख चली थी। हकलाकर चुप हो रहा। पर थोड़ी देर बाद वह अपने आप उठकर सीट पर जा बैठा और देर तक अपने कपड़ों की धूल झाड़ता रहा। वह क्यों उठकर फर्श पर लेट गया था? शायद उसे डर था कि बाहर से गाड़ी पर पथराव होगा या गोली चलेगी, शायद इसी कारण खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जा रहे थे।

कुछ भी कहना कठिन था। मुमकिन है किसी एक मुसाफिर ने किसी कारण से खिडकी का पल्ला चढ़ाया हो। उसकी देखा-देखी, बिना सोचे-समझे, धड़ाधड़ खिड़कियों के पल्ले चढ़ाए जाने लगे थे। बोझिल अनिश्चत-से वातावरण में सफर कटने लगा। रात गहराने लगी थी। डिब्बे के मुसांफिर स्तब्ध और शंकित ज्यों-के-त्यों बैठे थे। कभी गाड़ी की रफ्तार सहसा टूटकर धीमी पड़ जाती तो लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगते। कभी रास्ते में ही रुक जाती तो डिब्बे के अन्दर का सन्नाटा और भी गहरा हो उठता। केवल पठान निश्चित बैठे थे। हां, उन्होंने भी बतियाना छोड़ दिया था, क्योंकि उनकी बातचीत में कोई भी शामिल होने वाला नहीं था।

धीरे-धीरे पठान ऊंघने लगे जबकि अन्य मुसाफिर फटी-फटी आंखों से शून्य में देखे जा रहे थे। बुढ़िया मुंह-सिर लपेटे, टागें सीट पर चढ़ाए, बैठी-बैठी सो गयी थी। ऊपर वाली बर्थ पर एक पठान ने, अधलेटे ही, कुर्ते की जेब में से काले मनकों की तसबीह निकाल ली और उसे धीरे-धीरे हाथ में चलाने लगा।

खिड़की के बाहर आकाश में चांद निकल आया और चांदनी में बाहर की दुनिया और भी अनिश्चित, और भी अधिक रहस्यमयी हो उठी। किसी-किसी वक्त दूर किसी ओर आग के शोले उठते नजर आते, कोई नगर जल रहा था। गाड़ी किसी वक्त चिंघाड़ती हुई आगे बढ़ने लगती, फिर किसी वक्त उसकी रफ्तार धीमी पड़ जाती और मीलों तक धीमी रफ्तार से ही चलती रहती।

**बाबू ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल सिर हिला दिया और एक–आध बार पठान की ओर देखकर फिर खिड़की के बाहर झांकने लगा।**

**डब्बे में फिर मौन छा गया। तभी इंजन ने सीटी दी और उसकी एकरस रफ्तार टूट गयी। थोड़ी ही देर बाद खटाक–का–सा शब्द भी हुआ। शायद गाड़ी ने लाइन बदली थी। बाबू ने झांककर उस दिशा में देखा जिस ओर गाड़ी बढ़ी जा रही थी। शहर आ गया है। वह फिर ऊंची आवाज में चिल्लाया– अमृतसर आ गया है...**

सहसा दुबला बाबू खिड़की में से बाहर देखकर ऊंची आवाज में बोला–हरबंसपुरा निकल गया है। उसकी आवाज में उत्तेजना थी, वह जैसे चीखकर बोला था। डिब्बे के सभी लोग उसकी आवाज सुनकर चौंक गये। उसी वक्त डिब्बे के अधिकांश मुसाफिरों ने मानो उसकी आवाज को ही सुनकर करवट बदली।

ओ बाबू, चिल्लाता क्यों ए?, तसबीह वाला पठान चौंककर बोला–इदर उतरेगा तुम? जंजीर खींचूं?÷ और खी-खी करके हंस दिया। जाहिर है वह हरबंसपुरा की स्थिति से अथवा उसके नाम से अनभिज्ञ था।

बाबू ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल सिर हिला दिया और एक-आध बार पठान की ओर देखकर फिर खिड़की के बाहर झांकने लगा।

डब्बे में फिर मौन छा गया। तभी इंजन ने सीटी दी और उसकी एकरस रफ्तार टूट गयी। थोड़ी ही देर बाद खटाक-का-सा शब्द भी हुआ। शायद गाड़ी ने लाइन बदली थी। बाबू ने झांककर उस दिशा में देखा जिस ओर गाड़ी बढ़ी जा रही थी।

शहर आ गया है। वह फिर ऊंची आवाज में चिल्लाया–अमृतसर आ गया है। उसने फिर से कहा और उछलकर खड़ा हो गया, और ऊपर वाली बर्थ पर लेटे पठान को सम्बोधित करके चिल्लाया–ओ बे पठान के बच्चे! नीचे उतर तेरी मां की...नीचे उतर, तेरी उस पठान बनाने वाले की मैं...

बाबू चिल्लाने लगा और चीख-चीखकर गालियां बकने लगा था। तसबीह वाले पठान ने करवट बदली और बाबू की ओर देखकर बोला–ओ क्या ए बाबू? अमको कुच बोला? बाबू को उत्तेजित देखकर अन्य मुसाफिर भी उठ बैठे।

नीचे उतर, तेरी मैं...हिन्दू औरत को लात मारता है! हरामजादे! तेरी उस...।

ओ बाबू, बक-बक नई करो। ओ ख्रजीर के तुख्म, गाली मत बको, अमने बोल दिया। अम तुम्हारा जबान खींच लेगा।

गाली देता है मादर...। बाबू चिल्लाया और उछलकर सीट पर चढ़ गया। वह सिर से पांव तक कांप रहा था।

बस-बस। सरदार जी बोले–यह लड़ने की जगह नहीं है। थोड़ी देर का सफर बाकी है, आराम से बैठे।

तेरी मैं लात न तोडूं तो कहना, गाड़ी तेरे बाप की है? बाबू चिल्लाया।

ओ अमने क्या बोला! सबी लोग उसको निकालता था, अमने बी निकाला। ये इदर अमको गाली देता ए। अम इसका जबान खींच लेगा।

बुढ़िया बीच में फिर बोले उठी–वे जीण जोगयो, अराम नाल बैठो। वे रब्ब दिए बंदयो, कुछ होश करो।

उसके होंठ किसी प्रेत की तरह फड़फड़ाए जा रहे थे और उनमें से क्षीण-सी फुसफुसाहट सुनाई दे रही थी।

बाबू चिल्लाए जा रहा था–अपने घर में शेर बनता था। अब बोल, तेरी मैं उस पठान बनाने वाले की...।

तभी गाड़ी अमृतसर के प्लेटफार्म पर रुकी। प्लेटफार्म लोगों से खचाखच भरा था। प्लेटफार्म पर खड़े लोग झांक-झांक कर डिब्बों के अन्दर देखने लगे। बार-बार लोग एक ही सवाल पूछ रहे थे–पीछे क्या हुआ है? कहा पर दंगा हुआ है?

खचाखच भरे प्लेटफार्म पर शायद इसी बात की चर्चा चल रही थी कि पीछे क्या हुआ है। प्लेटफार्म पर खड़े दो-तीन खोंमचे वालों पर मुसाफिर टूटे पड़ रहे थे। सभी को सहसा भूख और प्यास परेशान करने लगी थी। इसी दौरान तीन-चार पठान हमारे डिब्बे के बाहर प्रकट हो गये और खिड़की में से झांक-झांक कर अन्दर देखने लगे। अपने पठान साथियों पर नजर पड़ते ही वे उनसे पश्तो में कुछ बोलने लगे। मैंने घूमकर देखा, बाबू डिब्बे में नहीं था। न जाने कब वह डिब्बे में से निकल गया था। मेरा माथा ठिनका। गुस्से में वह पागल हुआ जा रहा था। न जाने क्या कर बैठे! पर इस बीच डिब्बे के तीनों पठान, अपनी-अपनी गठरी उठाकर बाहर निकल गये और अपने पठान साथियों के साथ गाड़ी के अगले डिब्बे की ओर बढ़ गये। जो विभाजन पहले प्रत्येक डिब्बे के भीतर होता रहा था, अब सारी गाड़ी के स्तर पर होने लगा था।

–जारी

• शायरी...

*आग सीने में मोहब्बत की लगा*
*देते हैं*
*मीर मिलते हैं मुझे जब भी रुला देते हैं*
*एक तुम हो कि गुनाह कह के टाल*
*जाते हो*
*एक ग़ालिब हैं कि हर रोज़ पिला देते हैं*

◆ ◆ ◆

*मैंने राहत से कहा फूंक दो दिल की दुनिया*
*वो मेरे ख़त को उठाते हैं जला देते हैं*
*जब भी राना से मोहब्बत का पता पूछता हूं*
*हंस के मां पर वो कोई शे र सुना देते हैं।*

–सिराज फैसल ख़ान

◆ ◆ ◆

*मेरे पलंग पे बिखरी हुई किताबों को,*
*अदाए-अज्ज़ो-करम से उठा रही हो तुम*
*सुहाग-रात जो ढोलक पे गाये जाते हैं,*
*दबे सुरों में वही गीत गा रही हो तुम*
*तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं*

–साहिर लुधियानवी

• दामन अपना तार–तार है...

*दामन अपना तार–तार है*
*जीने में फिर भी ख़ुमार है*
*मुद्दत हुई तुम्हें भी गुज़रे*
*सड़कों पर कैसा ग़ुबार है*
*कभी दिलों के आसपास था*
*घर अब आदत में शुमार है*
*इक ढलान है हर जज़्बे का, हर तूफां का इक उतार है*
*आंखें वो अनमोल हैं जिनमें*
*सपनों की लम्बी क़तार है*
*जिसको आना था, आया हैय हमको अपना इंतज़ार है*

–ध्रुव गुप्त